

○ 13 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ○
⇒ TOTAL MARKS:- 100 ⇍

॥ 1 ॥ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

- >> *दिन रात बाप की महिमा की ?*
- >> *कभी भी मियाँ मिठू तो नहीं बने ?*
- >> *पवित्रता के फाउंडेशन को मज़बूत कर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव किया ?*
- >> *सदा एक के अंत में खोये हुए रहे ?*

◦◦◦ ••☆••❖◦◦◦ ••☆••❖◦◦◦ ••☆••❖◦◦◦
★ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ★
◎ *तपस्वी जीवन* ◎
◦◦◦ ••☆••❖◦◦◦ ••☆••❖◦◦◦ ••☆••❖◦◦◦

~~❖ *जैसे बाप को सर्व स्वरूपों से वा सर्व सम्बन्धों से जानना आवश्यक है, ऐसे ही बाप द्वारा स्वयं को भी जानना आवश्यक है।* जानना अर्थात् मानना। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसे मानकर चलेंगे तो देह में विदेही, व्यक्त में होते अव्यक्त, चलते-फिरते फरिश्ता वा कर्म करते हुए कर्मातीत स्थिति बन जायेगी।

◦◦◦ ••☆••❖◦◦◦ ••☆••❖◦◦◦ ••☆••❖◦◦◦

॥ 2 ॥ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

◦◦◦••★••❖◦◦◦••★••❖◦◦◦••★••❖◦◦◦

◦◦◦••★••❖◦◦◦••★••❖◦◦◦••★••❖◦◦◦

★ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ★

◎ *श्रेष्ठ स्वमान* ◎

◦◦◦••★••❖◦◦◦••★••❖◦◦◦••★••❖◦◦◦

* "मैं संगमयुगी पुरुषोत्तम आत्मा हूँ"

~◆ अपने को संगमयुगी पुरुषोत्तम आत्मायें अनुभव करते हो? पुरुषोत्तम अर्थात् पुरुषों में उत्तम पुरुष। तो अभी साधारण नहीं हो पुरुषोत्तम हो। क्योंकि ब्राह्मण अर्थात् श्रेष्ठ। ब्राह्मणों को सदा ऊंचा दिखाते हैं। मुख वंशावली दिखाते हैं ना। *तो ब्राह्मण बन गये अर्थात् श्रेष्ठ बन गये। साधारण पुरुष आप पुरुषोत्तम आत्माओंकी पूजा करते हैं क्योंकि ब्राह्मण अर्थात् पवित्र बन गये ना। तो पवित्रता की ही पूजा होती है। साधारण आत्मा भी पवित्रता को धारण करती है तो महान् आत्मा कहलाती है।* तो आप सब पवित्र आत्मायें हो ना कि मिक्स आत्मा हो? थोड़ी-थोड़ी अपवित्रता, थोड़ी-थोड़ी पवित्रता! नहीं। पवित्र आत्मा बन गये। तो पवित्रता ही श्रेष्ठता है। पवित्रता ही पूज्य है। तो ये नशा रहता है कि हम पुजारी से पूज्य बन गये?

~◆ ब्राह्मणों की पवित्रता का गायन है। कोई भी शुभ कार्य होगा तो ब्राह्मण से करायेंगे। अशुभ कार्य ब्राह्मण से नहीं करायेंगे। अशुभ कार्य ब्राह्मण करें तो कहेंगे ये नाम का ब्राह्मण है, काम का नहीं। तो आप नामधारी हो या कामधारी? नामधारी ब्राह्मण तो बहुत हैं। *लेकिन आप जैसा नाम वैसा काम करने वाले हो। साधारण आत्मा नहीं हो, विशेष आत्मा हो। ये खुशी है ना। कल साधारण थे और आज विशेष बन गये। तो विशेष आत्मा समझने से जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति होगी और जैसी स्थिति वैसे कर्म होंगे।* चेक करो जब स्थिति कमजोर होती है तो कर्म कैसे होते हैं। कर्म में भी कमजोरी आ जायेगी

और स्थिति शक्तिशाली तो कर्म भी शक्तिशाली होंगे।

~~◆ तो स्थिति का आधार है स्मृति। स्मृति खुशी की है तो स्थिति भी खुश। कर्म भी खुशी-खुशी से करेंगे। फाउन्डेशन है स्मृति। तो बाप ने स्मृति बदल ली। साधारण से विशेष आत्मा बने तो स्मृति चेंज हो गई। चाहे कर्म साधारण हों लेकिन साधारण कर्म में भी विशेषता हो। मानो खाना बना रहे हो तो ये तो साधारण कर्म है ना, सब करते हैं लेकिन आपका खाना बनाना और दूसरों के खाना बनाने में फर्क होगा ना। *आपके याद का भोजन और साधारण भोजन में अन्तर है। वो प्रसाद है, वो खाना है। तो विशेषता आ गई ना। याद में जो खाना खाते हो या बनाते हो तो उसको ब्रह्मा भोजन कहते हैं। तो सदा याद रखना कि परुषोत्तम विशेष आत्मायें बन गये तो साधारण कर्म कर नहीं सकते।*

A decorative horizontal border consisting of a repeating pattern of small white stars and black dots, alternating with larger brown stars and dots.

[[3]] स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

>>> *इस स्वमान का विशेष रूप से अध्यास किया ?*

A decorative horizontal pattern consisting of a sequence of small white circles, followed by a large brown star, another sequence of small white circles, and a final brown star.

A decorative horizontal pattern consisting of a sequence of brown star shapes and small brown sparkles, alternating with white circles.

रुहानी डिल प्रति

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएँ* ☆

~◆ तो *राजा का ऑर्डर उसी घड़ी उसी प्रकार से मानना - यह है राज्य-अधिकारी की निशानी।* ऐसे नहीं कि तीन-चार मिनट के अभ्यास के बाद मन माने या एकाग्रता के बजाए हलचल के बाद एकाग्र बने, इसको क्या कहेंगे?

~~✧ अधिकारी कहेंगे? तो ऐसी चेकिंग करो। क्योंकि पहले से ही सनाया है

कि *अंतिम समय की अंतिम रिजल्ट का समय एक सेकण्ड का क्वेचन एक ही होगा।*

~~♦ इन सूक्ष्म शक्तियों के अधिकारी बनने का अभ्यास अगर नहीं होगा अर्थात् *आपका मन राजा का ऑर्डर एक घड़ी के बजाए तीनचार घड़ियों में मानता है तो राज्य अधिकारी कहलायेंगे वा एक सेकण्ड के अंतिम पेपर में पास होगे? * कितने माक्रस मिलेंगे?

A decorative horizontal pattern consisting of a sequence of small circles, a single star, and a larger star, followed by a sequence of small circles, a single star, and a larger star, and so on.

॥ 4 ॥ रुहानी ड्रिल (Marks:- 10)

>>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रुहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

A decorative horizontal pattern consisting of a sequence of small circles, stars, and sparkles, alternating in a repeating sequence.

A decorative horizontal pattern consisting of a sequence of small circles, a five-pointed star, and a four-pointed star, all enclosed in a thin black outline.

अशरीरी स्थिति प्रति

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

A decorative horizontal pattern consisting of a sequence of small circles, a single star, and a larger star, followed by a sequence of small circles and a single star.

~~♦ तो ब्राह्मणों का स्थान और स्थिति - दोनों ऊँची। अगर स्थान की याद होगी तो स्थिति स्वतः ऊँची हो जायेगी। *ब्राह्मणों की दृष्टि भी सदा ऊपर रहती है। क्योंकि आत्मा 'आत्माओं' को देखती है, आत्मा ऊपर है तो दृष्टि भी ऊपर जायेगी।* कभी भी किससे मिलते हो या बात करते हो तो आत्मा को देखकर बात करते हो, आत्मा से बात करते हो, आपकी दृष्टि आत्मा की तरफ जाती है। आत्मा मस्तक में है ना। *तो ऊँची स्थिति में रहना सहज है।*

A decorative horizontal pattern consisting of a sequence of small circles, a single star, and a larger star, followed by a sequence of small circles and a single star.

[[5]] अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*



॥ 6 ॥ बाबा से रुहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

"डिल :- "सुखदाई बन सबको सुख देना

» *मैं आत्मा मधुबन बाबा की कुटिया में बैठ बाबा के प्रेम तरगों में
इबी हुई हूँ... यह पावन भूमि बहुत ही मीठी भूमि है... जहाँ निराकार परमपिता
परमात्मा ब्रह्मा तन में आकर नई दुनिया के लिए नया ज्ञान देते हैं...* पतितों
को पावन बनाते हैं... यहाँ की हवाओं में फैली मीठी-मीठी पावन खुशबू मन को
आहलादित कर रही है... *फिर मीठे बाबा मेरा हाथ पकड़ बगीचे में ले जाते हैं
और मुझे अपने हाथों से मीठे-मीठे अंगूर तोड़कर खिलाते हुए मीठी समझानी देते
हैं...*

* *मनसा-वाचा-कर्मणा कभी किसी को भी दुःख ना देने की शिक्षा देते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-* “मेरे लाडले बच्चे... *प्यार के सागर के दिल की मणि हो तो मीठे बन प्यार से मुस्कराओ...* हर दिल को पिता जैसे प्यार से सहलाओ... सबके सहयोगी बन सदा का दिल जीतो... *मीठे बोलो की टोली खाते रहो और खिलाते रहो... और मीठी वाणी से मीठे पिता का पता दे आओ...”*

» _ » *मैं आत्मा प्यारे बाबा के प्यार में दीवानी होकर सर्व पर प्यार के फूल बरसाते हुए कहती हैः-* “हाँ मेरे मीठे बाबा... मैं आत्मा कितनी मीठी और प्यारी बन गई हूँ... हर दिल की राहत हो गई हूँ... सारा विश्व मेरा परिवार है... *सब मेरे अपने ही आत्मा भाई हैं... इस सुंदर भाव में डबकर सदा की मीठी हो गयी हूँ...”*

^

* *प्यार के सागर प्यारे बाबा प्यार की मिठास का एहसास कराते हुए कहते हैं:-* “मीठे प्यारे फूल बच्चे... सारी दुनिया दुखों में डबी हुई निढाल हो गई है... आप प्यार भरी मिठास से उनमें नव जीवन का संचार करो... प्यार के मरहम से उनके दुखों को दूर करो... *मनसा-वाचा-कर्मणा सुख देकर उनके थके तनमन को आनन्द से भर दो... मा. प्यार सागर बन प्यार का दरिया बहाओ...”*

»» _ »» *मैं आत्मा प्रेम की बदली बन पूरे विश्व को प्रेम की वर्षा में भिगोते हुए कहती हूँ:-* “मेरे प्राणप्रिय बाबा... मैं आत्मा आपके मीठे साथे मैं प्रेम से ओतप्रोत हो रही हूँ... सब पर प्यार लुटाती जा रही हूँ... *सबपर सुखों की वर्षा कर दुखों से मुक्त कर रही हूँ.... मा. प्रेमसागर बन प्रेम के झरनों में सबको भिगो रही हूँ...”*

* *अपने प्रेम किरणों से विकारों को भस्म कर निर्विकारी बनाते हुए मेरे बाबा कहते हैं:-* “प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... आप बड़े वाले देवता हो... आपको सबको प्यार देना है सबका ध्यान रखना है सबकी सम्भाल करनी है... *ईश्वर के बच्चे हो सबको खुशियां देने के निमित्त हो... सारे विश्व को खुशियों से भर दो... हर आत्मा को प्रेम से सींच कर खुशहाली दो...”*

»» _ »» *मैं आत्मा डबल अहिंसक बन भाई-भाई की मीठी दृष्टि रख सब पर प्रेम लुटाते हुए कहती हूँ:-* “हाँ मेरे मीठे बाबा... *मैं आत्मा प्रेम धारा बनकर सबकी मीठी पालना कर रही हूँ...* मेरा पोर पोर प्यार में डूब रहा है और यह प्रेम तरंगे पूरे विश्व में फैला कर सुखों का कारवां ला रही हूँ.... *चारों ओर सुख और प्रेम बिखरा है...”*

]] 7]] योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

* "ड्रिल :- एक बाप की अव्यभिचारी याद में रह सतोप्रधान बनना है*"

»» _ »» अपनी सम्पूर्ण सतोप्रधान स्टेज को स्मृति में लाते ही मैं आत्मा स्वयं को अपने अनादि स्वरूप में परमधाम में देख रही हूँ। यहां मैं अपनी सम्पूर्ण सतोप्रधान अवस्था में अपने शिव पिता के सम्मुख हूँ। *सातों गुणों और सर्वशक्तियों से मैं आत्मा सम्पन्न हूँ। हर प्रकार के कर्म के बंधन से मुक्त हूँ*। अपनी इसी अशरीरी स्थिति में अपने स्वीट साइलेन्स होम परमधाम को छोड़, साकारी लोक में आ कर, शरीर धारण कर इस सृष्टि रूपी कर्म क्षेत्र पर कर्म करने के लिए मैं अवतरित होती हूँ।

»» _ »» एक - एक करके मुझे अपनी सारी अवस्थाओं की स्मृति आ रही है। मैं देख रही हूँ स्वयं को पहले - पहले नई सतोप्रधान दुनिया सतयुग में। यहां मैं आत्मा सम्पूर्ण सतोप्रधान हूँ। *मेरा निर्विकारी सम्पूर्ण देवताई स्वरूप बहुत ही आकर्षणमय है। धीरे - धीरे त्रेता युग में मैं आत्मा सम्पूर्ण सतोप्रधान अवस्था से सतो में आ गई इसलिए मुझ आत्मा की आकर्षण शक्ति में थोड़ी सी गिरावट आ गई*। मुझ आत्मा की चमक थोड़ी फीकी पड़ गई। द्वापर युग में आ कर, विकारों की प्रवेशता ने मुझ आत्मा को रजो अवस्था में पहुंचा दिया। यहां आ कर मुझ आत्मा की चमक बिल्कुल ही फीकी पड़ गई। कलयुग तक आते - आते मैं आत्मा तमो और कलयुग अंत तक आते - आते बिल्कुल ही तमोप्रधान हो गई।

»» _ »» सम्पूर्ण सतोप्रधान अवस्था में सोने के समान चमकने वाली मैं आत्मा तमोप्रधान हो जाने से लोहे के समान काली हो गई। किन्तु अब संगमयुग पर मेरे शिव पिता परमात्मा ने आ कर जान और योग सिखलाकर मुझे तमोप्रधान से दोबारा सतोप्रधान बनने का सहज उपाय बता दिया। *अब मैं जान गई हूँ कि मेरे शिव पिता परमात्मा की अव्यभिचारी याद ही मुझे तमोप्रधान से सतोप्रधान बना सकती है। इसलिए आत्मा के ऊपर चड़ी विकारों की कट को उतारने और स्वयं को सतोप्रधान बनाने के लिए मैं अपने शिव पिता

परमात्मा की अव्यभिचारी याद में अपने मन बुद्धि को एकाग्र कर, अशरीरी हो कर बैठ जाती हूँ* और अगले ही पल इस नश्वर देह का त्याग कर निराकारी ज्योति बिंदु आत्मा बन उड़ चलती हूँ अपने शिव पिता परमात्मा के पास।

» _ » अब मैं देख रही हूँ स्वयं को परमधाम में अपने निराकार शिव पिता परमात्मा के बिल्कुल पास। यहां मैं अपने प्यारे, मीठे शिव बाबा से आ रही सातों गुणों की सतरंगी किरणों और सर्वशक्तियों को स्वयं में भरपूर कर रही हूँ। *साथ ही साथ योग अग्नि में अपने विकर्मों को भी दग्ध कर रही हूँ। बाबा से आ रही सर्वशक्तियों की ज्वाला स्वरूप किरणें जैसे - जैसे मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं वैसे - वैसे मुझ आत्मा पर चढ़ी विकारों की कट जल कर भस्म हो रही है और मेरा स्वरूप फिर से सच्चे सोने के समान चमकदार हो रहा है*। विकारों की खाद निकल रही है और मैं आत्मा तमोप्रधान से दोबारा अपनी सतोप्रधान अवस्था को प्राप्त कर रही हूँ।

» _ » स्वयं को योग अग्नि में तपाकर, रीयल गोल्ड समान चमकदार बन कर अब मैं आत्मा वापिस साकारी लोक में लौट रही हूँ और अपने साकारी तन में आ कर अब मैं *ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर एक बाप की अव्यभिचारी याद में रह, स्वयं को सतोप्रधान बनाने का पुरुषार्थ कर रही हूँ*। पिछले अनेक जन्मों के आसुरी स्वभाव संस्कार जो आत्मा को तमोप्रधान बना रहे थे वे सभी आसुरी स्वभाव संस्कार बाबा की अव्यभिचारी याद में रहने से परिवर्तन हो रहे हैं। क्योंकि *बाबा की याद मेरे अंदर बल रही है जिससे पुराने स्वभाव संस्कारों को बदलना सहज हो रहा है*।

» _ » इस बात को अब मैं सदैव स्मृति में रखती हूँ कि मैं आत्मा जिस सम्पूर्ण सतोप्रधान अवस्था मेरे आई थी अब उसी सम्पूर्ण सतोप्रधान अवस्था मेरे मुझे वापिस अपने धाम लौटना है। *इसलिए अब केवल एक बाप की अव्यभिचारी याद में ही मुझे रहना है क्योंकि मेरे शिव पिता परमात्मा की अव्यभिचारी याद ही मुझे उसी सम्पूर्ण सतोप्रधान अवस्था तक ले जाएगी*। इसी स्मृति में निरन्तर रह कर अब मैं आत्मा किसी भी देहधारी के नाम रूप में ना

फंस कर, केवल पतित पावन अपने परम पिता परमात्मा की अव्यभिचारी याद में रह स्वयं को सतोप्रधान बना रही हूँ।

॥ 8 ॥ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

- *मैं पवित्रता के फॉउन्डेशन को मजबूत कर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने वाली आत्मा हूँ।*
- *मैं सम्पूर्ण और सम्पन्न आत्मा हूँ।*

➤➤ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

॥ 9 ॥ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

- *मैं आत्मा सदैव एक के अंत मैं खोई रहती हूँ ।*
- *मैं एकान्तवासी आत्मा हूँ ।*
- *मैं निरंतर योगी आत्मा हूँ ।*

➤➤ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

॥ 10 ॥ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✳️ अव्यक्त बापदादा :-

»» *वर्तमान समय आप बच्चों की विश्व को इस सेवा की आवश्यकता है जो चेहरे से, नयनों से, दो शब्द से हर आत्मा के दुःख को दूर कर खुशी दे दो।* आपको देखते ही खुश हो जाएं। इसलिए खुशनुमा चेहरा या खुशनुमा मूर्ति सदा रहे क्योंकि मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई देती है। कितना भी कोई भटकता हुआ, परेशान, दुःख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव भी समझते हों लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्ति, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर ले।

»» आज मन की खुशी के लिए कितना खर्चा करते हैं, कितने मनोरंजन के नये-नये साधन बनाते हैं। *वह हैं अल्पकाल के साधन और आपकी है सदाकाल की सच्ची साधना।* तो साधना उन आत्माओं को परिवर्तन कर ले। *हाय-हाय ले आवें और वाह-वाह लेकर जाये। वाह कमाल है - परमात्म आत्माओं की! तो यह सेवा करो।* समय प्रति समय जितना अल्पकाल के साधनों से परेशान होते जायेंगे, ऐसे समय पर आपकी खुशी उन्हों को सहारा बन जायेगी क्योंकि आप हैं ही खुशनसीब।

✳️ *ड्रिल :- "सच्ची खुशी बाँटने की सेवा का अनुभव"*

»» रात्रि को पूरे दिन का चार्ट देकर मैं आत्मा... अपना स्थूल शरीर बिस्तर पर छोड़कर *सूक्ष्म वतन मैं चली जाती हूँ... मीठी ब्रह्मा माँ की स्नेह भरी गोदी मैं सो जाती हूँ... ब्रह्म मुहूर्त के सुनहरे समय मैं... मीठी माँ अपना प्यार भरा हाथ मेरे सिर पर फिराते हुए... मुझे मीठी वाणी से मीठे बच्चे, लाडले बच्चे कह कर जगा रही है...* मीठी माँ गुणों और वरदानों से मुझ आत्मा को सजा रही है...

»» पुरी तरह चार्ज होकर... *अपनी सम्पन्न और भरपूर अवस्था मैं मैं

आत्मा... अपने स्थूल शरीर में प्रवेश करती हूँ... मैं स्वयं को ईश्वरीय खजानों से भरपूर देख रही हूँ...* साक्षी होकर मैं देखती हूँ कि... आज संसार में चारों तरफ कितना दुःख, अशांति है... आत्मायें कष्टों और पीड़ाओं से कराह रही हैं... आत्माएं भिखारी की भाँति तलाश रही हैं... कि उनके अंधकारमय जीवन में... कहीं से खुशी की हल्की सी रोशनी नज़र आ जाये...

»→ _ »→ मैं आत्मा खुशियों के सागर पिता की संतान हूँ... *मैं खुशी के खजाने की मालिक हूँ... मैं आत्मा खुशी के खजाने से भरपूर हूँ... लबालब हूँ... मैं आत्मा अपने मुस्कुराते चेहरे से, नयनों से, बोल से सर्व को यह खजाना बांटती जा रही हूँ...* खुशियों के फव्वारे बाबा के नीचे स्थित मैं आत्मा... सर्व आत्माओं पर खुशी का खजाना बरसा रही हूँ...

»→ _ »→ आत्माओं के कष्ट दूर हो रहे हैं... वे सच्ची खुशी प्राप्त कर स्वयं को धन्य धन्य महसूस रही हैं... *मुझ फरिश्ते के वरदानी बोल, मधुर बोल आत्माओं को कष्टों से मुक्त करते जा रहे हैं... उनके जीवन में मिठास घोल रहे हैं...* बाबा मुझे यह सबसे श्रेष्ठ सेवा कराने के निमित्त बना रहे हैं...

»→ _ »→ मैं आत्मा यह सच्ची सेवा कर रही हूँ... सर्व को खुशी का खजाना बांटती जा रही हूँ... आत्मायें, जो कि मनोरंजन के साधन आदि पर कितना खर्चा करके अल्पकाल की खुशी की तलाश कर रही हैं... लेकिन फिर भी उनको खुशी नहीं मिल पा रही है... वे *दुःखी, अशांत आत्मायें परमपिता परमात्मा से प्राप्त सच्ची खुशी को प्राप्त कर वाह-वाह कर रही हैं... उन के जीवन की बगिया इस सच्ची खुशी के शीतल जल से लहलहा गयी हैं... सभी के दिलों मैं परमात्म प्रत्यक्षता हो रही है... चारों ओर वाह बाबा, वाह बाबा के मधुर बोल गूंज रहे हैं...*

○_○ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

॥ ॐ शांति ॥
